देहली 7

स्मृति एक स्थान है।

कई वर्षों तक मैंने माना कि स्मृति एक अभिलेखागार है।

एक पात्र।

एक तरह का आंतरिक भंडार जिसमें तथ्य, नाम, तिथियाँ, चेहरे और घटनाएँ सँजोकर रखी जाएँ।

यह एक व्यवस्थित दृष्टि थी।

तर्कसंगत।

यहाँ तक कि आश्वस्त करने वाली।

फिर समय ने मुझे कुछ अलग सिखाया।

स्मृति सँजोती नहीं।

स्मृति बसती है।

यह अभिलेखागार नहीं है।

यह एक स्थान है।

और हर स्थान की तरह इसके भी कमरे होते हैं।

गलियारे।

दरवाज़े।

खिड़कियाँ।

कुछ अक्सर खोली जाती हैं।

कुछ वर्षों तक बंद रहती हैं।

जब तक कोई चीज़, अचानक, उन्हें फिर से न खोल दे।

यह कोई गंध हो सकती है।

कोई सड़क।

कोई तस्वीर।

असावधानी से सुना कोई शब्द।

अचानक हम अब वर्तमान में नहीं रहते।

हम कहीं और लौट आए हैं।

शारीरिक रूप से नहीं।

आंतरिक रूप से।

और यह आश्चर्यजनक है कि वे स्थान कितने बने रहते हैं।

मुझे वे क्षण याद आते हैं जिन्हें मैं भूल चुका समझता था।

तुच्छ दृश्य।

एक मेज़।

एक आवाज़।

अधखुला एक दरवाज़ा।

कोई साधारण दिन।

दशकों तक वे मौन रहते हैं।

फिर वे लगभग विचलित कर देने वाली सटीकता के साथ उभरते हैं।

मानो वे प्रतीक्षा में रुके रहे हों।

और शायद ठीक ऐसा ही है।

शायद स्मृति सचमुच भूलती नहीं।

शायद वह चुनती है।

सँजोती है।

प्रतीक्षा करती है।

मैंने इतना लंबा जीवन जिया कि लोगों को ओझल होते देखा।

स्थानों को बदलते।

शहरों को चेहरा बदलते।

समूचे संसारों को विलीन होते।

फिर भी कुछ बचा रहता।

स्मृति।

विषाद के रूप में नहीं।

निरंतरता के रूप में।

विषाद पीछे देखता है।

स्मृति जोड़ती है।

यह एक महत्वपूर्ण अंतर है।

वर्षों तक मैंने अतीत में क़ैद लोगों को देखा।

और अन्य को अतीत से आलोकित।

पहले लौटने की कोशिश करते थे।

दूसरे अपने जिए हुए का उपयोग वर्तमान को बेहतर समझने के लिए करते थे।

स्मृति दोनों काम कर सकती है।

वह एक कारागार बन सकती है।

या फिर एक पुस्तकालय।

यह इस पर निर्भर करता है कि हम उसका उपयोग कैसे करते हैं।

समय बीतने के साथ मैं दूसरी संभावना को वरीयता देने लगा।

मैं अतीत में जीना नहीं चाहता था।

मैं उससे संवाद करना चाहता था।

क्योंकि हर अनुभव एक निशान छोड़ता है।

हर मुलाक़ात एक निशान छोड़ती है।

हर प्रेम।

हर भूल।

हर विदाई।

हर हानि।

हर सफलता।

हर चीज़ कुछ न कुछ छोड़ती है।

और जो वह छोड़ती है वह हमारी कल्पना से कहीं अधिक हमें प्रभावित करती रहती है।

कभी-कभी मैंने ख़ुद से पूछा कि कितने लोग अब भी हमारे भीतर जीते हैं।

वे नहीं जो उपस्थित हैं।

वे जो अनुपस्थित हैं।

एक पिता।

एक शिक्षक।

एक मित्र।

कोई प्रिय व्यक्ति।

एक सहकर्मी।

कोई आकस्मिक उपस्थिति।

कई वर्षों पहले चले गए।

फिर भी वे हमारे लिए गए निर्णयों के ज़रिए बोलते रहते हैं।

उन मूल्यों के ज़रिए जिनकी हम रक्षा करते हैं।

उन सिद्धांतों के ज़रिए जिन्हें हम धोखा न देने का चुनाव करते हैं।

इस अर्थ में स्मृति आबाद है।

उसके भीतर हम कभी अकेले नहीं होते।

हम अपने साथ समूचे अदृश्य समुदाय लिए चलते हैं।

अपनी यात्राओं के दौरान मैंने कई स्थान देखे।

कुछ भव्य।

कुछ भुला देने योग्य।

कुछ जिन्हें समझाना असंभव।

समय के साथ मैंने एक कौतूहलपूर्ण परिघटना खोजी।

वास्तविक भूगोल और आंतरिक भूगोल विरले ही मेल खाते हैं।

ऐसे शहर हैं जिनमें मैं वर्षों रहा और जिन्हें मैं कम याद करता हूँ।

और ऐसे स्थान हैं जिन्हें कुछ ही दिनों में पार किया और जो मेरे भीतर जीते रहते हैं।

क्योंकि स्मृति समय को नहीं मापती।

वह अर्थ को मापती है।

वह उसे सँजोती है जिसने हमें बदला।

वह उसे धुँधला पड़ने देती है जिसने गहरे निशान नहीं छोड़े।

इसीलिए दो व्यक्ति एक ही घटना जी सकते हैं और उसे विपरीत ढंग से याद रख सकते हैं।

वे तथ्य को नहीं सँजोते।

वे अर्थ को सँजोते हैं।

और अर्थ सदैव व्यक्तिगत होता है।

उम्र के साथ हम एक और सबक भी सीखते हैं।

स्मृति अचल नहीं है।

वह हमारे साथ बदलती है।

वही घटना बीस, चालीस, साठ या अस्सी वर्ष की उम्र में अलग-अलग अर्थ ग्रहण करती है।

घटना वही रहती है।

देखने वाला बदल जाता है।

और देखने वाले का बदलना यानी व्याख्या का बदलना।

इस खोज ने मुझे कई चीज़ों से मेल-मिलाप करने में मदद की।

मैं समझा कि मुझे हर चीज़ एक ही ढंग से याद रखना ज़रूरी नहीं।

कि मैं पुराने अनुभवों को नए पाठ दे सकता था।

कि मैं कुछ चीज़ों को क्षमा कर सकता था।

कुछ अन्य को समझ सकता था।

और कुछ को स्वीकार कर सकता था।

क्योंकि स्मृति एक अदालत नहीं है।

यह एक संवाद है।

कभी कठोर।

कभी कोमल।

पर सदा खुला।

ऐसे लोग हैं जो अतीत को मिटाने की कोशिश में जीवन बिता देते हैं।

मुझे नहीं लगता कि यह संभव है।

और शायद यह वांछनीय भी न होता।

क्योंकि अतीत में वह पदार्थ है जिससे हम बने हैं।

उसे मिटाना यानी ख़ुद को मिटाना।

उसे समझना कहीं बेहतर।

उसे व्यवस्थित करना कहीं बेहतर।

उसके साथ चलना सीखना कहीं बेहतर।

आज जब मैं पीछे देखता हूँ, मुझे वर्षों की कोई शृंखला नहीं दिखती।

मुझे स्थान दिखते हैं।

आंतरिक स्थान।

कुछ उज्ज्वल।

कुछ कठिन।

कुछ अब भी रहस्यमय।

पर सभी आवश्यक।

सभी एक ही रचना का हिस्सा।

शायद समय यही सिखाने की कोशिश करता है।

स्मृति लौटने के लिए नहीं है।

वह समझने के लिए है।

वह उसे निरंतरता देने के लिए है जो हम रहे हैं।

वह हमारी कथा को असंबद्ध घटनाओं की एक शृंखला बनने से रोकने के लिए है।

राह के अंत में, यादें बची रहती हैं।

पर उस सतही ढंग से नहीं जैसा हम अक्सर सोचते हैं।

वे भू-भागों की तरह बची रहती हैं।

आंतरिक भू-दृश्यों की तरह।

उन स्थानों की तरह जहाँ हम हर बार लौटते हैं जब हमें यह समझने की ज़रूरत होती है कि हम कौन हैं।

इसीलिए, इतने वर्षों बाद, मैं स्मृति को अब मन का एक कार्य नहीं मानता।

मैं उसे एक मातृभूमि मानता हूँ।

बिना सीमाओं की एक मातृभूमि।

बिना झंडों के।

बिना किसी पते के।

एक स्थान जो जहाँ भी जाऊँ मेरे साथ चलता रहता है।

क्योंकि स्मृति कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसके हम मालिक हों।

यह वह स्थान है जिसमें हम जीते रहते हैं, उस सबके साथ जिसने हमें वह बनाया जो हम हैं।

स्मृति एक स्थान है।